B. A. Part - I
Economics - Honours
Paper - II
Macro Economics
Topic - Value of Money
(मुद्रा का मूल्य)

Munmun Choudhary
Asst. prof.
Department of
Economics,
A. S. College
Bikramganj

मुद्रा का मूल्य से अभिप्राय इसके विनिमय - मूल्य (Exchange Value) से है। वास्तव में मुद्रा का अपना कोई मूल्य नहीं होता, परन्तु विनिमय - माध्यम होने के कारण इसमें अन्य वस्तुएं तथा सेवाएँ प्राप्त करने की शक्ति होती है। इस प्रकार 'मुद्रा के मूल्य' का अर्थ मुद्रा की क्रय शक्ति (Purchasing power) है। दूसरे शब्दों में मुद्रा मूल्य से अभिप्राय वस्तुओं तथा सेवाओं की उस मात्रा से है जो किसी निश्चित समय पर मुद्रा की एक इकाई के बदले में प्राप्त की जा सकती है। अब प्रश्न यह उठता है कि मुद्रा विनिमय - माध्यम होने के कारण अपने बदले में जब अनेक प्रकार की वस्तुएं तथा सेवाएँ प्राप्त कर सकती है तो क्या हमें मुद्रा का मूल्य इन अलग अलग वस्तुओं के रूप में व्यक्त करना होगा अथवा इन सब में से किसी एक वस्तु के रूप में? इन दोनों में से कोई भी तरीका अपनाना न तो व्यवहारिक है और न उचित है। मुद्रा सामूहिक मूल्य मापक का कार्य करती है। इसलिए मुद्रा का मूल्य मापने का आधार वस्तुओं तथा सेवाओं की सामूहिक मात्रा होती है। केन्स ने लिखा है कि मुद्रा की क्रय-शक्ति किसी विशेष स्थिति में वस्तुओं और सेवाओं की उस मात्रा पर आधारित होती है जो मुद्रा की एक इकाई खरीद सकती है।

Scanned by TapScanner

इससे यह अर्थ निकलता है जो मुद्रा का मूल्य एक ऐसी सम्पूर्ण वस्तु (composite commodity) के मूल्य द्वारा मापा जा सकता है जो उन विभिन्न वस्तुओं व सेवाओं की अनुपाती मात्राओं का संग्रह है जिनको आय, व्यय करके प्राप्त किया जा सकता है।"

मुद्रा का मूल्य जानने के लिए हमें मुद्रा की सामान्य क्रय-शक्ति (General purchasing power) देखनी होती है और इसके लिए सामान्य कीमतों (general prices) को ज्ञात करना अनिवार्य होता है। यहाँ यह समझ लेना आवश्यक है कि मुद्रा की सामान्य क्रय शक्ति तथा वस्तुओं के सामान्य कीमत स्तर (General price level) में विपरीत सम्बन्ध होता है।

सुप्रसिद्ध अमेरिकी अर्थशास्त्री इर्विंग फिशर (Irving fisher) के शब्दों में, "मुद्रा की क्रय-शक्ति कीमत-स्तर के विपरीत होती है, इसलिए मुद्रा की क्रय-शक्ति का अध्ययन कीमत-स्तर का अध्ययन है।" वस्तुओं की कीमतें बढ़ने का अर्थ यह होता है मुद्रा की एक इकाई के बदले में अब कम मात्रा में वस्तुएँ मिलती है। यह इस बात का सूचक है कि मुद्रा का मूल्य घट गया है। इसी प्रकार कीमत-स्तर घटने पर मुद्रा मूल्य बढ़ता है।

इस प्रकार –

$$V_m = \frac{1}{P}$$

V_m से अभिप्राय मुद्रा के मूल्य से है तथा P का अर्थ है सामान्य कीमत-स्तर (General price level)।

सामान्य कीमत - स्तर विभिन्न वस्तुओं और सेवाओं की कीमतों का औसत है। इसके घटने - बढ़ने का अर्थ यह नहीं होता कि सभी वस्तुओं तथा सेवाओं की कीमतें समान रूप से घट - बढ़ रही है। अलग - अलग वस्तुएँ लेने पर सम्भव है कि कुछ की कीमतें बढ़ी हो और कुछ की कम हुई हों। इसलिए कुछ अर्थशास्त्रीयों जैसे हायेक (Hayek) ने सामान्य कीमत के विचार की आलोचना की है। परन्तु, चूँकि सामान्य कीमत - स्तर (General Price level) सभी प्रकार की वस्तुओं की कीमत का औसत होता है, इसलिए यह भले ही शत - प्रतिशत ठीक न हो, परंतु फिर भी काफी अंश तक ठीक होता है।

मुद्रा की मूल्य की धारणा को निश्चित रूप देने के लिए क्राउथर ने मुद्रा के तीन प्रामाणिक मूल्य बताये है - (i) थोक मूल्य (Wholesale Value)
(ii) फुटकर मूल्य (Retail Value), अथवा उपभोक्ता मूल्य (Consumer's Value).
(iii) श्रम - मूल्य (Labour Value).

(i) थोक मूल्य (Wholesale Value) :- थोक बाजार में वस्तुओं में प्रचलित मूल्य को थोक मूल्य कहते है और इसके आधार पर मुद्रा का जो तैयार किया जाता है उसे मुद्रा का थोक मूल्य (Wholesale Value of Money) कहते है। थोक मूल्य का संकलन करना बहुत ही आसान है और मुद्रा का मूल्य प्रायः इसी के आधार पर व्यक्त किया जाता है।

Scanned by TapScanner

@(ii) फुटकर मूल्य (Retail Value) :- फुटकर बाजार में वस्तुओं के प्रचलित मूल्य को खुदरा मूल्य कहते है। खुदरा मूल्य पर ही दैनिक उपयोग में आने वाली वस्तुओं की खरीद-बिक्री होती है। फुटकर मूल्य के आधार पर तैयार किया गया मुद्रा का मूल्य मुद्रा का फुटकर (खुदरा) मूल्य (Labour Value Money) कहते है। चूँकि विभिन्न प्रकार के मजदूरों की मजदूरी की दरों में काफी विभिन्नता पायी जाती है, अतः मुद्रा के श्रम-मूल्य को प्राप्त करने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

व्यवहारिक रूप में मुद्रा के निरपेक्ष (absolute) मूल्य की माप करना कठिन है, परन्तु हम यह जान सकते है कि समय के साथ-साथ मुद्रा मुद्रा के मूल्य में कितना परिवर्तन हुआ है। इस प्रकार मुद्रा के मूल्य का महत्व सापेक्ष (relative) दृष्टि से है जिससे किसी एक समय पर मुद्रा के मूल्य की तुलना किसी अन्य समय पर मुद्रा के मूल्य से की जा सकती है। इसके लिए कीमत निर्देशांक (Price index numbers) का प्रयोग किया जाता है।

Scanned by TapScanner